

अलवर ज़िले के पर्यटन स्थलों का भौगोलिक अध्ययन

Mahesh Chand Meena*

Associate Professor, Department of Geography, Govt. P. G. College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश:- अलवर राजस्थान का एक प्रमुख पर्यटन शहर है जो दिल्ली से राजस्थान की यात्रा करते समय सबसे पहले आता है। अलवर दिल्ली से 150 किमी और जयपुर शहर से 150 किमी उत्तर में है। अलवर शहर भानगढ़ किले, झीलें, सरिस्का टाइगर रिजर्व और हेरिटेज हेरलिस जैसे पर्यटन स्थलों के कारण बहुत लोकप्रिय है। राज्य का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल होने के अलावा, यह कई बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग के कारण भी प्रसिद्ध है। यदि आप अलवर शहर की यात्रा करने की योजना बना रहे हैं तो आप यहां बाला-क्विला, भानगढ़ किला, पांडु पोल और अन्य मंदिरों को देखने जा सकते हैं। इस लेख में, हम अलवर शहर के बारे में और साथ ही अलवर के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

मुख्य बिंदु:- अलवर के प्रमुख पर्यटन स्थल, अलवर के बाला किला, भानगढ़ का किला, सिलीसाढ़ लेक पैलेस, सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य, नीलकंठ महादेव मंदिर, सिटी पैलेस, विजय मंदिर, मोती डूंगरी, पांडुपोल, भर्तृहरि, अलवर में रेस्तरां और स्थानीय भोजन, अलवर तक कैसे पहुंचें, अलवर में परिवहन व्यवस्था।

-----X-----

प्रस्तावना:

पर्यटन का अर्थ घूमना है, सिर्फ घूमना है, आनंद और जिज्ञासा के लिए घूमना है। ऐसे पर्यटन में खुशी है। ऐसा पर्यटन दैनिक जीवन की भारी चिंताओं से दूर है। जो व्यक्ति इस स्थिति में रहता है, वह जितने लंबे समय तक जीवित रहता है, उतना ही खुश जीव।

पर्यटन का दूसरा लाभ देश और विदेश के बारे में जानकारी है। इससे हमारा ज्ञान समृद्ध होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान की तरह किताबी ज्ञान उतना प्रभावी नहीं है। पर्यटन के माध्यम से, हम देश और विदेश के भोजन और भोजन, सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यह कुछ अंधविश्वासों को हमारे दिमाग में तोड़ देता है। हम मानते हैं कि दुनिया भर के मनुष्य मूल रूप से एक हैं। हमारी दूरी कम है। मन उदार हो जाता है। पूरा देश और दुनिया हमारी लगती है। राष्ट्रीय एकता बढ़ाने में पर्यटन का बड़ा योगदान है।

देशताना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। विदेश और देश की यात्रा करने की प्रवृत्ति मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आधुनिक युग में, ग्रामीण इलाकों की उपयोगिता कई अन्य तरीकों से भी स्थापित की गई है। देश का उद्देश्य न केवल मन की शांति है, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक लाभों के उद्देश्य से लोग देश से देश की यात्रा करते हैं।

यही कारण है कि आधुनिक युग में, एक व्यक्तिगत रूप के अलावा, एक राज्य या राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में यात्रा करने के अवसर भी हैं। वाणिज्यिक-वाणिज्यिक कनेक्टिविटी के लिए भी यात्राएं की जाती हैं। विभिन्न राजनेताओं या राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के रूप में राजनीतिक लाभ के लिए अंतराष्ट्रीय यात्राएं की जाती हैं। विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के उद्देश्य से भी यात्राएं आयोजित की जाती हैं। इसका मतलब यह है कि आधुनिक युग में, ग्रामीण इलाकों में बहुउद्देशीय हो गया है।

अध्ययन क्षेत्र:

1106 में, विक्रम संवत् आमेर के राजा ने अपने नाम के तहत अलपुर शहर की स्थापना की, जो बाद में अलवर बन गया। शहर पर कई राजपूत राजाओं द्वारा शासन किया गया है जिसमें खानजादा राजपूत, निकुंभ राजपूत, बडगुजर राजपूत और अंत में नृका राजपूत शामिल हैं। एक राजपूत राजा, प्रताप सिंह, ने एक समझौते पर भरतपुर के जाट राजा से अलवर किले पर कब्जा कर लिया और आधुनिक अलवर की नींव रखी जो उपनिवेशवाद के दौरान एक रियासत बन गई। 18 मार्च 1948 को, राज्य को तीन पड़ोसी रियासतों - भरतपुर, धौलपुर और करौली में मिला दिया गया। 15 मई 1948 को, अलवर को पड़ोसी राज्यों और आधुनिक राजस्थान बनाने के लिए अजमेर

के क्षेत्र में जोड़ा गया। इसके बाद इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र भी बनाया गया, जिसके बाद यह तेजी से विकसित हुआ।

भौगोलिक स्थिति:

जिला अलवर राजस्थान के उत्तर पूर्व में अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में 27°4 "से 28°4" उत्तरी अक्षांश और 67°4 "से 77°13" पूर्वी देशांतर में स्थित है। यह आकार में काफी द्विघात है। जिले की सीमाएँ पूर्व में भरतपुर, दक्षिण में जयपुर, दक्षिण में जयपुर, दौसा, उत्तर में जिला और उत्तर में हरियाणा राज्य से घिरी हुई हैं।



उद्देश्य:

1. अलवर जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों का अध्ययन करना।
2. अलवर में पर्यटकों के महत्व का अध्ययन किया गया।

परिकल्पना:

1. अलवर जिला पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
2. अलवर जिला पर्यटन की सुविधाएं प्रदान करने के लिए परिवहन से जुड़ा हुआ है।

अध्ययन विधि:

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ों का प्रयोग किया गया है। आकड़ों के संकलन राजस्थान पर्यटन विभाग, सरिस्का वन जीव अभयारण्य, जिला कलेक्टर कार्यालय, व्यक्तिगत सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अनुसूची, डायरी, पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र एवं विभिन्न वेबसाइट एवं पुस्तकों के माध्यम से किया गया है।

क्षेत्रफल व भौतिक स्वरूप:

जनगणना 2011 के अनुसार जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 8380 वर्ग कि.मी. है जो राजस्थान के भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.45 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जिले की आकृति लगभग चौकोर है जो जिले के दक्षिणी पश्चिमी भागों में मुख्य अरावली श्रेणियों की निरन्तरता बनाये रखते हुए घाटियों के ऊँचे पठारों के रूप में विद्यमान है। जिले के मध्य भाग में उत्तर से दक्षिण की ओर अरावली पहाड़ियों की ऊँचाई 456 मीटर से 700 मीटर है। जिले का यह भू-भाग जंगलों से परिपूर्ण है। जिले का पश्चिमी भाग रेतीला है जबकि मध्य भाग में पर्वतीय तथा पठारी भू-भाग है।

भाषाएँ एवं दर्शनीय स्थल:

जिले में मुख्य रूप से चार प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, जिले के पूर्वी भाग में, पश्चिम में मारवाड़ी, पश्चिम में मारवाड़ी, उत्तर में मेवाती और दक्षिण में दुखंडी बाली में प्रचलित है, लेकिन आम का उपयोग हिंदी मौजूद है।

राजस्थान के पर्यटन स्थलों में अलवर का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। अलवर ऐतिहासिक इमारतों से भरा है। अलवर अरावली पहाड़ियों के बीच में स्थित है। अलवर का प्राचीन नाम शाल्वपुर था। अलवर में 14 वीं शताब्दी में निर्मित एक मकबरा और कई प्राचीन मस्जिदें हैं। अलवर जिले में सुरम्य सिलिसार्थ झील, सरिस्का अभयारण्य, पांडुपेल, भर्तृहरि का स्थान, नीलकंठ महादेव, तलवृक्ष, नालदेश्वर, अजबगढ़, भानगढ़ आदि के किनारे स्थित महल में एक संग्रहालय है। सिलीसाढ़ और जयसमंद बांध और अलवर शहर के होपसर्कस और अजायबघर (संग्रहालय) बाला किले में करणी माता के मंदिर का जायजा लेते हैं।

अलवर के प्रमुख पर्यटन स्थल:

अलवर राजस्थान का एक प्रमुख शहर है और इसके साथ ही यह अपने विशेष पर्यटन स्थलों के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र भी है। अगर आप अलवर शहर की यात्रा करने जा रहे हैं, तो यहां हम आपको अलवर के 13 प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में बता रहे हैं जहां आपको अवश्य जाना चाहिए।

1. बाला किला:

बाला किला या अलवर किला अलवर शहर के ऊपर अरावली रेंज में स्थित है। यह किला अलवर शहर के प्रमुख पर्यटक शहरों में से एक है जिसका निर्माण 15 वीं शताब्दी में हसन खान मेवाती

द्वारा किया गया था। बाला किला अलवर शहर में 300 मीटर ऊंची चट्टान पर स्थित है जो शहर को एक राजसी दृश्य देता है। अगर आप बाला किला घूमने जाते हैं, तो इसका हर हिस्सा अपना इतिहास बताता है।



2. अलवर का भानगढ़ किला:

भानगढ़ का किला अलवर जिले के अरावली पर्वतमाला में सरिस्का अभयारण्य पर स्थित है। यह किला ढलान वाले क्षेत्र में पहाड़ियों के तल पर स्थित है, जो देखने में बहुत भयानक लगता है। भानगढ़ किला अलवर शहर का एक बहुत प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, जो अपनी भूटिया कहानियों के कारण सबसे अधिक चर्चा में रहता है। भानगढ़ किला यहां होने वाली घटनाओं के कारण इतना प्रसिद्ध है कि कोई भी इस किले के अंदर अकेले जाने से डरता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण या एएसआई ने भी इस किले में रात में पर्यटकों और स्थानीय लोगों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है।



3. सिलीसेढ़ लेक पैलेस:

सिलीसेढ़ झील अलवर शहर का एक अद्भुत पर्यटन आकर्षण है जो कई मजेदार गतिविधियों और स्थानों से भरा हुआ है। या झील 7 वर्ग किलोमीटर के बड़े क्षेत्र में फैली हुई है जो यहाँ आने

वाले पर्यटकों और यात्रियों को तरोताजा कर देती है। यह झील क्षेत्र एक प्रसिद्ध पिकनिक स्थल है जो पर्यटकों द्वारा बहुत पसंद किया जाता है।



4. सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य:

सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य अलवर शहर का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो लगभग 800 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। अभयारण्य में घास के मैदान, शुष्क पर्णपाती वन, चट्टानें शामिल हैं, जिन्हें अब सरिस्का टाइगर रिजर्व के रूप में जाना जाता है। यह बाघों का सफलतापूर्वक प्रवास करने वाला पहला बाघ अभयारण्य है और यह तांबे के साथ खनिज संसाधनों की बहुतायत में पाया जाता है। सरिस्का इतिहास प्रेमियों के साथ-साथ प्रकृति प्रेमियों, वन्यजीव उत्साही लोगों के लिए अलवर शहर में जाने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।



5. सरिस्का पैलेस:

सरिस्का महल का निर्माण 1892 में अलवर के महामहिम महाराजा सवाई जय सिंह ने करवाया था। अलवर शहर में भव्य सरिस्का पैलेस सबसे अच्छी जगह है। इस खूबसूरत महल का

हर कोना बहुत आकर्षित करता है। यह शानदार महल 20 एकड़ के हरे-भरे परिदृश्य में फैला हुआ है, जो पर्यटकों को इसकी भव्यता में डुबो देता है। सरिस्का पैलेस की सुंदरता का मुख्य कारण यह है कि यह सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान के किनारे पर स्थित है। महाराजा सवाई जय सिंह ने इस खूबसूरत महल को अपने मेहमानों और खुद के लिए शिकार लॉज के रूप में बनवाया था। आपको बता दें कि सरिस्का पैलेस अब 5 सितारा होटल के रूप में पर्यटकों के लिए खुला है और राजस्थान में सबसे लोकप्रिय विरासत होटलों में से एक है।



6. केसरोली:

केसरोली अलवर में दुर्लभ होटलों में से एक है जो 14 वीं शताब्दी से मौजूद है। हिल फोर्ट-केसरोली उन लोगों के लिए एक शानदार जगह है जो अपने शहर से एक हफ्ते की छुट्टी लेने के लिए जगह की तलाश में हैं। नीमराना का हिल फोर्ट-केसरोली एक शानदार प्राचीन विरासत महल है जो इतिहास में किसी को भी वापस ले जाता है।

होटल में एक बड़े स्विमिंग पूल और एक सुंदर बगीचे के साथ कई शानदार सुविधाएं हैं। इस होटल के कमरे पूरी तरह से राजस्थानी शैली में सजाए गए हैं, जिससे पर्यटकों को रॉयल्टी का एहसास होता है। अगर आप अलवर शहर घूमने आ रहे हैं तो इस केसरोली को जरूर देखें।

7. सिटी पैलेस:

सिटी पैलेस अलवर में सबसे अच्छी जगहों में से एक है जिसे विनय विलास महल के नाम से भी जाना जाता है। यह महल मुगल और राजस्थानी डिजाइन के सुंदर मिश्रण के साथ वास्तुकला का एक चमत्कार है जो आपको शाही जीवन शैली की झलक देता है। सिटी पैलेस की दीवारें, सीलिंग भित्ति चित्र और दर्पण काम इस महल को बेहद आकर्षक बनाते हैं।



8. नीलकंठ महादेव मंदिर:

नीलकंठ मंदिर टाड़गर रिजर्व में लगभग 30 किमी दूर स्थित मंदिरों का एक समूह है जो अब लगभग खंडहर बन चुका है लेकिन आज भी स्थानीय लोग यहां स्थित कई मंदिरों को मानते हैं। नीलकंठ मंदिर अलवर में धार्मिक महत्व, उत्तम पत्थर की नक्काशी और हरे भरे जंगलों के लिए एक प्रमुख स्थल है।

9. मोती डूंगरी:

मोती डूंगरी मूल रूप से वर्ष 1882 में बनाया गया था। 1928 तक, यह अलवर के शाही परिवार का मुख्य निवास था। 1928 के बाद, महाराजा जय सिंह ने पुराने महल को ढहाने का फैसला किया और बाद में इसे एक और शानदार इमारत से बदल दिया।

10. विजय मंदिर पैलेस:

विजय मंदिर पैलेस अलवर शहर के केंद्र से 10 किमी दूर स्थित है और अलवर में सबसे खास पर्यटन स्थलों में से एक है। ऐसा कहा जाता है कि विजय मंदिर का निर्माण भावुक राजा जय सिंह ने अपने जुनून के कारण किया था। जय सिंह वास्तुकला के संरक्षक थे, और उन्हें सुंदर महल बनाने का शौक था। विजय मंदिर महल की झील के पास शानदार बगीचों के बीच में स्थित है और इस महल में 105 कमरे हैं जो अच्छी तरह से सजी हैं। सीता राम मंदिर, महल का एक प्रमुख आकर्षण, रामनवमी के दौरान भक्तों द्वारा रोमांचित होता है।

11. पांडुपोल मंदिर:

पांडुपोल एक हनुमान मंदिर है, जो अलवर के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह मंदिर सरिस्का के जंगलों के अंदर स्थित है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, इस मंदिर में पांडवों ने अपना गुप्त समय बिताया था। अन्य मंदिरों के विपरीत, हनुमान की मूर्ति एकतरफा अवस्था में है।



12. भर्तृहरि मंदिर:

राजस्थान के अलवर में भर्तृहरि का एक मंदिर है, जिसे भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है, इसे भर्तृहरि धाम के नाम से भी जाना जाता है। उनका मकबरा अलवर राज्य के घने जंगल में मौजूद है। एक अखंड दीपक अपने सातवें द्वार पर जलता रहता है। उसे भर्तृहरि के प्रकाश के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह जयपुर अलवर मार्ग पर स्थित है और अलवर शहर से इसकी दूरी 32 किमी है। राजा भर्तृहरि अपने भाई विक्रमादित्य की स्थापना करके अमर हो गए, जिनके नाम पर विक्रम संवत् की स्थापना हुई, जो आज भी चैत्रमास के नवरात्र से शुरू होता है। भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की एक सप्तमी और अष्टमी यहाँ मनाई जाती है। इस तीर्थस्थल को कन्नफदे नाथ साधुओं के लिए विशेष मान्यता प्राप्त है जो नाथपंथ को जागृत करते हैं।



13. मूसी महारानी की छतरी:

राजस्थान के राजपूत वास्तुकला में गर्व और सम्मान को चित्रित करने के लिए आमतौर पर छत्रियों का उपयोग किया जाता है।

महाराजा बख्तावर सिंह और रानी रानी मूसी के शाही सेनेफैफ को इस स्मारक के मुख्य महल की इमारत के बाहर रखा गया है। यह अलवर के शासकों का एक सुंदर लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का स्मारक है।



अलवर में रेस्तरां और स्थानीय भोजन:

अलवर शहर मावा (दूध का केक) और अलवर के कलाकंद का घर है। ये मिठाई शहर की परिभाषा है, इसे चखने के बिना, आपकी यात्रा पूरी नहीं होगी। अलवर आपको कई लोकप्रिय राजस्थानी व्यंजन और नाश्ते प्रदान करता है। शहर के रेस्तरां के मेनू में पुरी, दाल बाटी चोइरमा, राबड़ी, लस्सी, गढ़ा सब्जी जैसे व्यंजन शामिल हैं।



अलवर घूमने का सबसे अच्छा मौसम:

यदि आप अलवर शहर के पर्यटन स्थलों की यात्रा करने की योजना बना रहे हैं, तो हम आपको बता दें कि यहाँ यात्रा करने के लिए अक्टूबर से मार्च का समय वर्ष के अन्य महीनों की तुलना में बहुत अधिक सुखद है। गर्मी के मौसम में अलवर का तापमान 50°C तक पहुँच जाता है, इसलिए गर्मी के मौसम में इस शहर में जाने से बचें। रक्षाबंधन के अवसर पर यहां पतंग उड़ाने की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है।

अलवर कैसे पहुंचे:

अलवर शहर का निकटतम हवाई अड्डा दिल्ली हवाई अड्डा (163 किमी) है, इस हवाई अड्डे से आप कैब को अलवर ले जा सकते हैं।

इस शहर में ट्रेन कनेक्टिविटी भी बहुत अच्छी है। अलवर तक ट्रेन से जाना एक अच्छा विकल्प है क्योंकि ट्रेन में यात्रा के दौरान कई शानदार दृश्य दिखाई देते हैं।

फ्लाइट से अलवर कैसे पहुंचे:

अलवर के लिए सीधी उड़ान कनेक्टिविटी नहीं है। अलवर के लिए निकटतम हवाई अड्डा जयपुर है जो 165 किमी दूर है। हवाई अड्डे से अलवर पहुंचने के लिए, आप एक टैक्सी किराए पर ले सकते हैं या इस मार्ग पर नियमित बसों की मदद ले सकते हैं।

अलवर से सड़क मार्ग से कैसे पहुंचे:

राज्य के विभिन्न शहरों से अलवर के लिए नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं। दिन हो या रात, नियमित बड़े इस मार्ग पर उपलब्ध हैं। आप जयपुर, जोधपुर आदि स्थानों से भी अलवर के लिए एक शेयर टैक्सी या टैक्सी किराए पर ले सकते हैं।

ट्रेन से अलवर कैसे पहुंचे:

अलवर जंक्शन भारत और राज्य के कई प्रमुख शहरों से संचालित होने वाली नियमित ट्रेनों के साथ अलवर शहर का प्रमुख रेलवे स्टेशन है।

निष्कर्ष:

उपयुक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अलवर में बने प्राचीन मकबरे और कई प्राचीन मस्जिदें स्थित हैं। महल में एक संग्रहालय है जो सुरम्य सिलिसर झील के किनारे स्थित है, जिसमें हिंदी, संस्कृत और फारसी पांडुलिपियों और राजस्थानी और मुगल लघु चित्रों का संग्रह है। यहां के अन्य दर्शनीय स्थलों में प्रसिद्ध सरिस्का बाघ अभयारण्य शामिल है। अलवर खूबसूरत झीलों, शानदार महलों, शानदार मंदिरों, शानदार स्मारकों और विशाल किलों के लिए प्रसिद्ध है। अलवर की सुंदरता पर्यटकों को आकर्षित करती है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि अलवर जिला पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. अलवर के प्रमुख पर्यटन स्थल, सूचना, जिला कलेक्टर कार्यालय, अलवर।
2. राजस्थान पर्यटन विभाग, जयपुर।
3. राजस्थान का भूगोल, प्रो एच एस शर्मा, पंचशील प्रकाशन, चैड़ा रास्ता, अलवर।
4. सरिस्का वन्य जीव अभयारण्य, पर्यटन विभाग, अलवर।
5. अलवर जिले के पर्यटन स्थलों की व्यक्तिगत यात्रा, 2016

Corresponding Author

Mahesh Chand Meena*

Associate Professor, Department of Geography,
Govt. P. G. College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan